नर्गिकतमे भूणनम् ॥ मश्यमाः मिरेया भार्मि असि क्निने ने प्रीक में विद्याभिइह्या भन्न भने म भवने गमे वि गढ वृष्ठ भरिष्ठ इ भाभिक्विम् मुद्दे इन इन भुर्भ प्क विभिन्न प्रामित नन नन निर्मा प्रामित नन नन निर्मा भी भी नन नन निर्मा प्रामित निर्मा प्रामित निर्मा निर्मा प्रामित निर्मा निर्मा प्रामित निर्मा निर्मा प्रामित निर्मा प्रामित निर्मा न भ्रियुवन : भ्रीवन्म विग्य न माण्ण पूरण नेक्षि वर्ग नेक्षि भर्न : मेंबक्षियः भ भन्षानी लगान्यः प्रनिक् भ्रायलकः भनाभ्रहनुक्ष्वः भन्निक्भाष्यदः ।।। शिक्त्मिशं ॰ अष्टिकतम् ॥ इउः भूतिभण्यं भद्भू ० हैं समयनुष्य ०० रण्यनुष्य भीद्वात्व श्रयं क्ट्रिश्लाउण श्रममन्य वर्ग १ नमाण्येय ०१नीनय ३ मर्भर्नय ०३ विभ्यय क्रियश्चित गहुमः॥ मक्षेप्य ० द्यान्य क्य विश्म उन्ने विभू विभू निश्मिन नप्य - निर्विधण्य. ग्राभेलय त्रासंग्रान्य ।। शउष्तुः यतुः भचरः १। १ र प्यान्य पना इ इनेभउये D 833 H ०. श्रम्भारे

विष्णानवभी इउभिक्षा गरेमाभिनवक्षेत्र सन्तर्भे मान्यक्ष भीइर इक्रचं इक्रेच् क्वनभी उभिक्तिने उक्रुड्यू भवं भारते भरे परे जनमेर्ने भेष्ण्याने हो देशकः॥ उद्गलेशन विधि मीरण्यस्तर्मेन उत्र भाषे चीरभनेवभीकिन भेड़ी मुक्ली अध्यानक के के किथा के यम गाउँ॥ यसग्भन्नर्थं उद्देश मेल क्रिअडणीः निक्त्रयिक भेग इसथा थे कर्ड भर्ग ॥ मॅर्रमेग्भिनव्धि उच्छोग्भः अयक्तिः भनचभक्ति योगनभाष्ठ विः भचकाभमा। मेर्स म्लानवर्ग अनवभ्रयुग्यि भामभएक येगन भक्र भूष्ट जला हेराडी।नवभीग्राष्ट्रभी विक्र इष्ट्रियग्यूलं: पिर्मान्त्रसंग्रहम्मार्भेष्वभागान्त्रभाग्यम् िएक किक अभिनित्र सक्ष अधिका भी मिस् कारियः यशिकि वि योक्षे उद्देशकाक्षे विषये कार्लिय विषये विषये भ उभिन्निने के उद्यक्त मिं भिन्नि भिन्नि रम्भाण्य भारत कराया इंग्स्य अरानम द्रिम चेडमेक्स्य प्रमायस्य दरक्राम्य अरानम् ॥

इन्स.

3

विभयउभभमें उभाभिमें उनक्पूमिण्य भिउ भम् कर्ष ममूना ममभाप रणने डाग्कने थर्छन् की सनिविष्ठ मेरे भारतना मोत्रा। गर्भलकाराधन्याभिति॥ एडिङ्का मन्हारिटामि- उउः भन्म भनेन्डाभः॥ॐयंभगालिक्डाभः॥ विर्मेभण्यनभूः॥विरंनभः इत्युक्त्वे । रविग्मभः इत्यु प्रह्णे।विभू न्भः कृष्ये। वियनभः नर्के। विनन्भः प्रक्रि। विभः नभः धर्म्यः॥ विम्मागचरी॥ गमम्मूर्यिक गमठक्र्यणि उत्रिम्भः भूम्मयार्गि।। मुबर्गन्भ।। क्लान्डियाक विकाजभिन्म् वीर अनुष्टा भिडं भक्ष प्रान्भवी मण

क्लंकिरीधिनभी।क्लंग्मभूग्रम्बीभूक्षिक्षेत्रम्मीभी भीउँमार्वक निगर्भिक्षेत्रभविष्ठिधिकान्। मिक्टाकालभयुक्तिकुर्णग्यक्तिभागा एउड़ाल एरें के कि क्राला राधिकार के मार्थ है। या महिमिश्व अ यस कर भारत है। इभिराद्रणः भर्भेराउस्पान्त्राम्यचायक्किलिभुः भगीवस्पिरीध लास्युवा द्राभे अर्थ्य मार्थिन निर्मा केमल क्रिक भेडरल्या भ लभी ॥ सनेकानभेयने धना कर्मिक्षिका अलभिकाभनगभरीहो श्रिकेंगेफ्रज्ञभी॥ इस्टिभन्भी॥ श्येत्रीलकाभगभगगीर्वलियनभी रण्नकीलकालिथेउँकाष्ट्रभन ध्यार्ष्ट्रभी।भाभिद्रलण्डेकुण्यमिल्ने प्राप्तिक्षे मुक्रण्य माम्मेने अपिकी भारियक्षा हड्डा थक्ति भराम इंगिका भ लाडि भिर्या। देशिएक भी। मेसुर्गमिकार्ज्य मेरिन्नं निणन्यम क्रिस्ता गृह भक्ष उत्ताभमन्त्र । भिरुर्गमिकार्ज्य मेरिक्नं विश्व प्रमानिकार्य मेरिक्नं महिला

व्या ।

उचामकराभव ॥ उड्यम् ॥ भम्मा मेल्या इं अका कर्गे विक्षित्रम् ग्राम्बर्ग अस्ति अस्ति । विष्ठ एटाममभन्भा॥ अनिपङ्गार्थिरंगिकलाम्भनायक ठक्कार्डिक भचका नीचलाथ शिक्षार ॥ ५६अन्ननी॥ गर्नेगिकण्डगवित्रद्रम्यनमित्रभी क्रण्कारमेन्स् स्व क्रःधउचनभः॥ ४८गतः॥ सग्राहानिमध्याणगीठाल्यिषणनियं ग्रामम् नभ्यक्या भुग्येन्यात्रा। तर्यम्य ॥ विभिन्नम् स्मिन्न क्राम्यक्रम् क्रिक्

छन्भाग्भय॥ सीभावहवामा। छिठगवस्कूलाविमः स्रम्भारिगराभया प्रमनिक्रिकिष्ठाभियुं लियमिवं रकः॥ मी रंस् प्रवस्य॥ स्ट्रानिकि एः भवेः र्था नक विडे भया उन ये केवया अध्या अंभागता है। निर्मे के निर्मे के निर्मे अभागता है। निर्मे के निर्मे के निर्मे केंद्रनम्मित नमुक्त्रभेषानेयानके प्रेमियान्य ॥ मियानियान्य मानुष्य स्क्रार्ठियुगुम भूरायाधिनमाउँछक्त द्विष्ट्रभूमाविला एन सम्प्रियाकि भ्रम्लेनएन नवाभगिक्रिउण्यमण्डिए वद्गाणिधार्यमा इन्हिन्य विजित्ता भा वर्णन्यराग्य लिप्युविष्कृतिग्रम्भव्तिम्धः॥लिपिक्रण्यायक्र ग्रसच्चिद्रसभित्रः ग्रम्मिरिंग्मिरिंभच्छेग्भव्छठे । चूवरःसंप्रक मिथण्यस्याक्षिणि विनर्यननिष्ठिः अत्य निष्यान्यनि लक्ष्मणक्षेत्राहुन्त्रभ भाष्ट्रा अध्यानिक किर्दे नामायकः। माः भ गिर्वे ज्वरं का विदिष्ठिकार्या भएकि है केना अस्य प्राप्टिकिएक गिरो। रे क्रिन्भेवर रेशा क्ष्मि सिराप्त्री हिरापस्य किं वर्राभियाः। एक भार्त्भाविभवाण्यमिन भार्त्ना भूया लीव कीने यहा केल यवाकाभ्रभविगमाः। अग्झान्तिनिकामा भक्ति। उस्मिक

महम्मिस्सिक्यन् अचक् ॥ गल्मग्रम् प्रवेष्ट्रण्यिद्र लियि हेर्य मुल भागाः भेजाः कानिस्तियाम् विः ॥ हो प्रमा विक्व विक्वल भनेक समा भूरणयामगिक इद्राम् द्यागणवामा जिभगमाय निकालना भीउया भार्ये अर्गने देहरानी पेन्स् अनुहार्गीः॥अर्ग्ये अन्यक्षेत्रहानी पेन्से भम्भियाचन्त्रभावभन्नाद्वनग्द्रीराभिय। यहकोग्गर्थन्त्रः अवस्तिराभने भक्भ विकिप्यमुह्भूरभवक्रद्ध भिम्प ॥ विनेध्यक्र गुरंड इभवनिध्र लेड वल्डी बनाइका प्रविक्वलकाव्यक्ताहर १००। विन्युले भहि किछे नियाः उस्र भिद्य कर्मान् भचकाभठल प्रमाशिशाभावत्वेभ भूरे मरमक्सभएगम इहिकाकिभक्षिण्य भक्षा भव्यम् र्शितम् र्थिनयं भूक्ष्रभः ॥ म्यां प्रत्रे उद्गत्म में न्युभिष्ठिभवान्यार्थे ११ भवेभव्याभेण्ड्य सीमक् रूप्यक्षणा प्रमुक्तिम भिष्ठ कुल्लाले थ इमीपरामा । पर्मालय प्रजानापनीकामार्गिश्य मस्मियायभन गुरुयम् अन्ता १मा भयमेण्या अस्ति मानान्य । असे हर्रानेमच भव्यक्तियारेयान्य ॥ थिर्ष्ण्येयमञ्जन इन्द्रिमिन

राभ•

क्रियेंग्रे॥ थाक्ष्युर्गिभ्रान्ध्र ग्र्यान्य भ्यार्थ। स्युरंगिलापे द्वेके निग इन्स्मिक्ति भक्षभवाद्भिणात्र कक्किणमन्नी रण्डिभागीमां इक यारिविद्युधमधाम प्राथववितिलिक्ष्यक्रथ्रभिरंगयुवाः लियित्युअम कानुभक्तिगान्त्रक्रनिथ क्रवण्युभागन्त्रभीन्त्रमयह्वउद्गण्ड ॥मुक् भनेभभाष्य्यभाग्ययभन्त्रणः पर्वप्रम्भंभप्रमुल्येविकितिस्यः॥ लिश्चानि विमान विमान अक्रिक्त अक्रिक्त में भागिक विचित्रचक्रम ॥व्छाउँ भक्तिभक्ष्यं भिक्रेनेसऽभक्षम समुद्रंभगल्यू के अक्रिमा अस्या ॥ विद्या भाषा कि विश्व के समा उर्ग एक्टिं लक्क्रीक्षा अन्तर्क क्षेत्र विकास मान्य मान्य मान्य मान त्य वि लक्ष मक्षिलक्षेत्र विष्ट्रिए अभिके॥भारत्य स्वभ्यार भिक्क प्रभवार वसार इस्किन्ड पर्व ॥भारतिका प्रचन्नविनं निक्षान्यभिरावेनाः लापन्यक्रियां महास्रोडे या। मुक्सुक्लेब्रियाना ज्ञानिक । भुक्षक्रमा विद्याया गर्मा विक्रियारिया। मानिक्षे विक्राव अग्रक्षा प्रविष्म भविषम्भन्मेवक उठारिमभ्रमा १एप्रिया झिंड्ड इस्टिन सन्तरान दिभारेर ५० वाधिसंह क्याि सिर्फ्रिया। सम्वेष्ममभेने सम्मा सिर्फ्रिया। सम्बेष्ममभेने सम्भे र्राक्षेत्रयोग्याम्मार्थाक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष विनी ।भिष्टिक्मिणभचरवेर्यननिलायदिय। भिवन्स्रीधाउन्द्विति नन्माङ्गिलिप्डि अन्दन्यिनम्भङ्गि विद्वध्याविध्यक्ष

नामाङ्गालाप्य विभागत्त्र किला के के प्रमानित भूक्ष्य मान्ति भूक्ष्य मान्ति भूक्ष्य के प्रमानित भूक्ष्य कि प्रमानित भूक्ष्य कि प्रमानित कि

भन्वभेयक्तु उत्वह्ल है। स्१॥

सीत्भ एडिम्ड्यामेनड्रेनिगी रेंचुग्भेवाम्ग्रामनाभीनापनविष्ठिःथरालः॥



